।। पड़ाव ।।

कुछ लेागो का मानना है कि,
मैं हार चुका हूं ।
सच ये नही है
दो वक्त की रोटी जीत नही होती
मैं संघर्परत् हूं
हां मै खंजर पास नही रखता
मेरी म्यान में कलम होती है,
स्याही से भरी और दिल में शब्दों की तीर
मैं शोला भी नही उगलता कलम से
क्योंकि मेरा मकसद जहर बोना नही है
मैं समानता का बीज बोना चाहता हूं ।
आदमी को आदमी के पास लाना चाहता हूं ।
मैं नही चाहता कि,
आदमी जाति धर्म के नाम पर बिखण्डित रहे ।
भले ही अर्थ की तुला पर व्यर्थ हूं
दिल मे हौशले रखता हूं
आदमी की आन मान शान को पहचानता हूं
सच यही है उद्देश्य मेरा,
समानता से दूर बैठे आदमी के लिये संघर्परत् हूं । मौन ही सही
हारकर भी उठा लेता हूं कलम,
आदमियत के लिये तो जी रहा हूं
जानता हूं जीवन का अन्तिम पडाव है मृत्यु
मेरे जीवन का अर्थ है समभाव
सच इसीलिये तो जी रहा हूं
वरना कब का जीवन के अन्तिम पडाव को पार कर लिया होता ।

नन्दलाल भारती